

राजा ठा. किशोर सिंह

सन् 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में दमोह जिले की तत्कालीन हिण्डोरिया रियासत के राजा ठा. किशोर सिंह लोधी जी ने अदम्य साहस का परिचय देते हुए बुन्देलखण्ड अंचल में क्रान्ति का सूत्रपात किया और उपलब्ध सीमित संसाधनों से ही दमोह जिले में स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व किया।

राजा ठा. किशोर सिंह का जन्म हिंडोरिया में लोधी क्षत्रिय समाज के 'महदेले' फिरके के एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था। उस समय सागर कमिश्नरी में हिण्डोरिया एक जागीर के रूप में जानी जाती थी जिसमें 60-70 गाँव शामिल थे। अंग्रेज अपनी राज्य हड़प नीति के तहत हिण्डोरिया रियासत को भी हड़पना चाहते थे। इसलिए अंग्रेजी सेना ने हिण्डोरिया रियासत पर जमकर गोलाबारी की। इसके साक्ष्य अभी भी क्षतिग्रस्त हिण्डोरिया की गढ़ी में देखने को मिलते हैं।

जुलाई, 1857 में सागर के कमिश्नर ने अपने मुंशी मो. अलीमुद्दीन के हाथ ठा. किशोरसिंह को एक पत्र भेजा था जिसमें कहा गया था कि यदि वे बगावत का रास्ता छोड़ दें तो उनकी फौज का सारा खर्च सरकारी खजाने से दिया जाएगा और साथ ही उनकी पुरानी जागीरें वापस दे दी जाएगी। लेकिन देशभक्ति में डूबे ठा. किशोर सिंह पर इसका कोई प्रभाव नहीं हुआ और उन्होंने फिरंगियों को अपनी मातृभूमि से खदेड़ने की बात मन में ठान ली। इस तरह दमोह जिले में 1857 का समर शुरू हुआ। राजा किशोर सिंह की अगुवाई में दमोह क्षेत्र के घर-घर में क्रांतिकारी गतिविधियाँ शुरू हो गईं। शाहगढ, सागर के राजा बखतवली ने अपनी फौज की एक टुकड़ी भेजकर इनका पूरा सहयोग किया।

ब्रिटिश शासन ने ठा. किशोरसिंह को जिंदा या मुर्दा पकड़ने के लिए एक हजार रुपये के इनाम की घोषणा की। क्रांतिकारियों की बढ़ती हुई सक्रियता के कारण अंग्रेजों को अपना मुख्यालय दमोह बनाना पड़ा। इस दौरान स्थिति यह बन गई कि समूचे सागर एवं दमोह के ग्रामीण इलाकों में भी विद्रोह की आग भड़क उठी और सभी इलाके क्रांतिकारियों के कब्जे में आ गए। सभी पुलिस स्टेशन वीरान हो गए। स्थिति की विकटता को देख अंग्रेजों

की सहायता के लिए जबलपुर और नागपुर से सहायता भेजी गई। हालांकि दमोह पर अंग्रेजों की तरफ से पन्ना एस्टेट के श्यामलजू का अधिकार था जबकि हिण्डोरिया, हटा और कुम्हारी के साथ-साथ दमोह के ग्रामीण क्षेत्र पर राजा किशोर सिंह का अधिकार ही बना रहा। विद्रोहियों की शक्ति को देखकर जनरल व्हाटलाँक भी उनसे टक्कर लेने से बचता रहा। क्रान्तिकारियों ने दमोह एवं सागर जिलों के जमींदारों से स्वयं आकर सहयोग करने या खाद्य सामग्री उपलब्ध करा कर सहयोग करने का कहा। इस तरह मानगढ़ के राजा गंगाधर, सिंग्रामपुर के राजा देवी सिंह, अभाने के राजा तेज सिंह आदि राजा किशोर सिंह और राव साहब स्वरूप सिंह के साथ हो गए।

अंग्रेजों ने राजा किशोर सिंह के हिण्डोरिया किले पर आक्रमण कर सैकड़ों क्रान्तिकारियों को बंदी बना लिया लेकिन राजा किशोर सिंह कुछ साथियों को लेकर बच निकले। इसके बाद भी, राजा किशोर सिंह अंग्रेजों से मुठभेड़ करते रहे। बाद में उनकी मृत्यु कब और कैसे हुई, इस संबंध में कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है। कहते हैं कि इस परिवार के आदि पूर्वज महाराजा ईश्वरदास लोधी जी ने सन 1183 में पृथ्वीराज से न केवल युद्ध किया अपितु उन्हें पराजित भी किया। राजा किशोर सिंह के वर्तमान वंशज अभी भी राजगढ़ी हिण्डोरिया में निवास करते हैं।